साहस शक्ति सक्रियता

छठ पुजा के पावन अवसर पर हिन्दु संहती का आह्ववान

आज छठ पुजा के पावन अवसर पर हिन्दुओ की बड़ी भीड़ सूर्यदेव को पुजने बड़े ही श्रद्धा से आते है कही कही देवी देवताओ का भव्य मन्दिर भी बनवा देते है । हिन्दु तो धर्म परायण होते ही है, मन्दिर बनवाना एक सामान्य बात है, किन्तु जब-जब इसी मन्दिर पर किसी भी स्थान पर अन्य धर्मीयों के द्वारा आक्रमण होता है, मन्दिरो को और देव मुर्तीयों को अपवित्र किया जाता है और तोड़ा जाता है, तब हिन्दुओ को अपमान महसुस नही होता है क्या ? अगर नही होता है तो उसकी वजह क्या है ? क्या हिन्दुओ का खुन ठण्डा हो गया हैं? क्या इसिलिए बार बार अपनी मातृ भूमि का विभाजन हिन्दुओ ने मान लिया है । इस लिए ऋषि कश्यप का स्थान कश्मीर से हिन्दुओ का निष्काषन देश भर के हिन्दुओ ने सहन/बर्दाशत कर लिया । क्या इतिहास का यही क्रम चलता रहेगा ? इसका अन्त कहा है ? जिस तरह मिस्त्र और पारस देश की सभ्यता मिट गयी, उसी तरह अपने सनातन हिन्दुओ की सभ्यता का भी विनाश हो जायेगा ? हमारे पूर्वज यह उपदेश देते है की सनातन धर्म का विनाश कभी नही होगा लेकिन गांधार, सिंध, पश्चिम पंजाब और पुर्व बंगाल से सनातन हिन्दु धर्म का विनाश तो हो चुका है । कश्मीर घाटी, कि भी यही दशा है, तो फिर इन बूर्जूगो का तर्क क्या बनता है, कि भारत के अन्य हिस्सों से भी सनातन धर्म का विनाश नही होगा । इन बूर्जूगो का आश्वास/विश्वास के कारण ही गांधार, सिंध, पश्चिम पंजाब और पूर्व बंगाल बचा नही । इसिलिए आज के पिढी के युवाओं को नये सिरे से सोचना होगा की ब्यैरकपूर से डनलप तक मुहर्रम के दिन जो दृश्य हम देख पाते है । क्या उससे हिन्दुओ को कोई संकेत नही मिलता है ? कोलकाता के मटीयाब्रुज, खिदीरपुर, पार्क सर्कस, इन्टाली समेत अनेक स्थान मे बार-बार यही चित्र देखने के लिए हिन्दु मजबुर नही होते है ?

इसी स्थिती का सामना करने के लिए हिन्दु संहती का जन्म हुआ है, हिन्दु संहती आज के नौजवानों का आह्ववान करती है कि अपनी धरती, धर्म, मातृजाति के सम्मान कि रक्षा के लिए चुनौतीयों को स्विकार करे और अपने पूरूस्वार्थ का परिचय दे ।

भारत माता कि जय, जय श्री राम

हिन्दु संहती कि ओर से तपन घोष सभापती, 5 न०, भूवन धर लाइन, कोलकाता-012
से प्रकाशीत व प्रचारीत सम्पर्क - 9674623463
E-mail - Hindusamhati@gmail.com
Website - www.Hindusamhati.org.